समवेत: ISSN 2321-6131 साहित्य, संस्कृति एवं शिक्षा से संबद्ध अर्द्धवार्षिक शोध पत्रिका

केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से सहयोग प्राप्त

संपादक :

डॉ. नवीन नंदवाना
सह आचार्य, हिंदी विभाग
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

प्रबंध संपादक :

डॉ. सविता नंदवाना

पत्र-व्यवहार एवं संपर्क :

डॉ. नवीन नन्दवाना
जी-9, ए-ब्लॉक, रामेश्वरम् अपार्टमेंट, हनुमान नगर, मनवाखेड़ा, उदयपुर (राज.) - 313003
(मो.) 09828351618, 09462751618
email : editordeskudr@gmail.com

आवरण चित्र :

डॉ. मयंक शर्मा
विख्यात चित्रकार, उदयपुर (राज.)

सदस्यता शुल्क :

व्यक्तिगत : वार्षिक - 500 रुपये,
पंचवार्षिक - 2,000 रुपये
संस्थागत : वार्षिक - 700 रुपये,
पंचवार्षिक - 3,000 रुपये

इस अंक का मूल्य : 300 रुपये

परामर्श एवं संपादक मण्डल :

प्रो. के. के. शर्मा
सेवानिवृत्त आचार्य, हिंदी भाषा एवं साहित्य,
केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा (उ.प्र.)

प्रो. माधव हाड़ा
पूर्व अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
मो.सु. विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.)

प्रो. नरेंद्र मिश्र
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
जयनारायण विश्वविद्यालय, जोधपुर (राज.)

प्रो. सुनील कुमार द्विवेदी
अध्यक्ष, हिंदी विभाग, उत्तर बंग विश्वविद्यालय,
राजाराममोहनपुर, दार्जिलिंग (प. बंगाल)

डॉ. सुनील कुलकर्णी
अध्यक्ष, तुलनात्मक भाषा विभाग,
उत्तर महाराष्ट्र विश्वविद्यालय, जलगाँव

डॉ. अखिलेश कुमार शंखधर
सह आचार्य, हिंदी विभाग,
मणिपुर विश्वविद्यालय, मणिपुर

कृपया सदस्यता राशि नगद/धनादेश/डिमांड ड्राफ्ट द्वारा **समवेत ध्वनि संस्थान** के नाम भेजें।

बैंक खाता विवरण: ICICI Bank Ltd., MLS University Branch, Udaipur (Raj.)
Account No. : 694 201 701373, IFSC : ICIC0006942

© संपादकाधीन

- संपादन कार्य पूर्णत: अवैतनिक है।
- प्रकाशित रचनाओं के विचार एवं विज्ञापनों से संपादक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- प्रकाशित सामग्री के उपयोग हेतु लेखक-संपादक की अनुमति अनिवार्य है।
- प्रकाशित आलेखों की मौलिकता के लिए सम्बन्धित लेखक उत्तरदायी हैं।
- समस्त विवादों के लिए न्यायालय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रकाशक :

समवेत ध्वनि संस्थान
जी-9, ए-ब्लॉक, रामेश्वरम् अपार्टमेंट, हनुमान नगर, मनवाखेड़ा, उदयपुर (राज.) - 313003

मुद्रक :

हिमांशु पब्लिकेशन्स
462, सेक्टर 11, हिरण मगरी, उदयपुर - 313 002 (राज.)
4379/4-B, प्रकाश ब्लॉक, अन्सारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली 2

अपनी बात

हिंदी का आधुनिक साहित्य एक लंबी यात्रा कर चुका है। यदि हम आधुनिक गद्य के विकास की ओर दृष्टि डालें तो पाते हैं कि इस धारा के महत्त्वपूर्ण पड़ावों में एक अहम् पड़ाव फणीश्वरनाथ रेणु का साहित्य भी है। प्रेमचंद के साहित्य के बाद रेणु के साहित्य को हम एक अहम् भूमिका में पाते हैं। रेणु हिंदी जगत के एक चर्चित रचनाकार हैं। हिंदी पाठकों के मध्य उनकी एक विशेष छवि बनी है और वह भी एक आंचलिक कथाकार की है। रेणु ने पूरे मन से अंचल की कथा को अपनी कलम के माध्यम से अभिव्यक्ति दी है। सच कहें तो रेणु के 'मैला आँचल' नामक उपन्यास से ही आंचलिकता को एक विशेष बल मिला और धीरे-धीरे इस प्रकार के लेखन की एक प्रवृत्ति ही चल पड़ी। वास्तव में रेणु ने अपने साहित्य के माध्यम से आंचलिकता को प्रमुख रूप से अभिव्यक्ति दी है किंतु ऐसा नहीं है कि उनका लेखन केवल आंचलिकता को ही उद्घाटित करने तक ही ठहर गया हो। वास्तव में रेणु ने आंचलिकता के साथ-साथ तत्कालीन समाज के विभिन्न मुद्दों को भी प्रमुखता से उठाया है।

रेणु ने कथा व कथेतर दोनों ही विधाओं में साधिकार लेखन किया है। 'मैला आँचल', 'परती परिकथा' 'जुलूस', 'कलंक मुक्ति', 'कितने चौराहे' और 'पल्टू बाबू रोड' आपके द्वारा रचित उपन्यास हैं। वहीं कहानी लेखन की दिशा में भी रेणु ने विशेष ख्याति अर्जित की है। 'एक आदिम रात्रि की महक', 'ठुमरी', 'अगिनखोर', 'अच्छे आदमी' और 'एक श्रावणी दोपहर की धूप' रेणु के कहानी संग्रह हैं। 'तीसरी कसम' कहानी की चर्चा साहित्य जगत में सदैव रही है। साथ ही 'पंचलाइट', 'रस प्रिया', 'लाल पान की बेगम', 'संवदिया' और 'पहलवान की ढोलक' आदि भी इनकी चर्चित कहानियाँ हैं। कथेतर रचनाकार के रूप में भी रेणु ख्यात हैं। 'ऋण जल-धन जल', 'नेपाली क्रांति कथा', 'वन तुलसी की गंध' और 'श्रुत अश्रुत पूर्व' आदि कथेतर रचनाओं की गूँज-अनुगूँज हमें हिंदी जगत में आज भी सुनाई पड़ती है।

रेणु के साहित्य में गाँव की महक है, वहाँ के लोग, रीति-रिवाज है; भाषा, बोली और पहनावा सब कुछ है। रेणु का 'मैला आँचल', 'गोदान' के बाद का दूसरा महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। अंचल की कथा कहने वाले रेणु 'परती परिकथा' में परती जमीन को हरा-भरा देखना चाहते हैं। 'कलंक मुक्ति' के माध्यम से रेणु ने वीमेंस हॉस्टल और मैटरनिटी सेंटर की कथा लेकर तत्कालीन भारतीय समाज के यथार्थ का उद्घाटन किया है। क्षेत्रीयता और सांप्रदायिकता जैसी गंभीर समस्याओं की ओर भी

रेणु का ध्यान जाता है। इन समस्याओं के साथ-साथ तत्कालीन समाज के यथार्थ का उद्घाटन भी अपने उपन्यास 'जुलूस' में करते हैं। भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन और भारतीय युवाओं से जुड़े विषयों को रेणु ने 'कितने चौराहे' नामक उपन्यास के माध्यम से उठाया है, वहीं 'पल्टू बाबू रोड' उपन्यास के माध्यम से रेणु ने भारतीय युवाओं के चरित्र, नौकरशाही की कार्यप्रणाली, राजनेताओं और राजनीति के यथार्थ पर प्रकाश डाला है। इस प्रकार रेणु एक कथाकार के रूप में अंचल तक ही नहीं रुकते वरन् देश और समाज से जुड़े अन्यान्य विषयों पर भी अपनी कलम चलाते हैं। रेणु की कहानियों में ग्रामांचल की संस्कृति और समस्याओं के साथ-साथ अन्य समसामयिक विषयों की अभिव्यक्ति मिलती है।

कथेतर लेखन के क्षेत्र में भी रेणु ने अपनी कलम चलाई है। नेपाल के मुक्ति संघर्ष को रेणु ने 'नेपाली क्रांति कथा' शीर्षक से वर्णित किया है। सूखे और बाढ़ की समस्या उनके संग्रह 'ऋण जल-धन जल' में प्रमुखता से व्यक्त हुई है। राष्ट्र-निर्माण और नवजागरण जैसे विषय भी रेणु की लेखनी से अछूते नहीं रहे। इन विषयों को रेणु ने अपने संग्रह 'श्रुत अश्रुत पूर्व' में वर्णित किया है। उनके पत्रों, रिपोर्ताज, कविताओं आदि के लेखन में भी हम एक विशेष प्रकार की महक महसूस कर सकते हैं। रेणु के साहित्य पर फिल्में भी बन चुकी हैं इनमें 'तीसरी कसम' और 'पंचलाइट' शीर्षक कहानियों पर बनी फिल्में विशेष चर्चित रही हैं।

आज हिंदी जगत वर्ष 2021 को रेणु के जन्म शताब्दी वर्ष के रूप में मना रहा है। इसी को ध्यान में रखते हुए 'समवेत' पत्रिका का यह अंक रेणु के साहित्य पर केंद्रित एक विशेषांक है। मैं इस अंक के सभी आलेख लेखकों के प्रति अपना आभार व्यक्त करता हूँ जिनके अकादमिक सहयोग से यह अंक आकार ले पाया। साथ ही विशेष आभार व्यक्त करता हूँ, इस अंक के आलेखों की समीक्षा करने वाले विद्वान साथियों का जिन्होंने अपनी व्यस्तता के बीच समय निकालकर अपना बहुमूल्य योगदान दिया। विभाग के कुछ शोधार्थी-विद्यार्थी इस कार्य में सदैव सहायक होते हैं, मैं उनका भी शुक्रिया अदा करता हूँ। आशा है यह अंक पाठकों, शोधार्थियों और विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।

धन्यवाद।

आपका

डॉ. नवीन नंदवाना

संपादक

अनुक्रम

1. **फणीश्वरनाथ रेणु : व्यक्ति और सृजन** 7
   डॉ. नवीन नंदवाना
2. **आदिम रसगंधों के गायक रेणु** 20
   डॉ. करुणाशंकर उपाध्याय
3. **'मैला आँचल' और आंचलिकता** 32
   डॉ. मनीषा मिश्र
4. **'मैला आँचल' में अभिव्यक्त सामाजिक यथार्थ** 41
   सुभाष चंद्र नंदवाना
5. **भारतीय गाँवों की यथार्थ तस्वीर : 'परती-परिकथा'** 50
   डॉ. आशीवाणी. के
6. **क्षेत्रीयता, सांप्रदायिकता और सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति : 'जुलूस'** 56
   दीपक कुमार
7. **नारी-जीवन के अंतर्विरोधों का संसार : 'कलंक मुक्ति'** 67
   डॉ. नीतू परिहार
8. **गुलामी के विरुद्ध किशोर युवकों के संघर्ष की बेजोड़ कहानी : 'कितने चौराहे'** 77
   डॉ. आदित्य कुमार गुप्त
9. **परिवार की दरकती दीवारें : 'पल्टू बाबू रोड'** 90
   डॉ. लोकेंद्र कुमार
10. **रेणु के उपन्यासों में किसान जीवन** 98
    श्रीनिवास त्यागी
11. **कथा-प्रयुक्ति का वैकल्पिक संसार : रेणु की कहानियाँ** 110
    डॉ. सुनील कुमार द्विवेदी
12. **रेणु के कथा साहित्य में प्रवाहमान संस्कृति की विरासत : ग्रामीण अंचल** 133
    पैंजूके

13. रेणु की कहानियों की अलक्षित संवेदना 142
डॉ. धनंजय कुमार साव

14. फणीश्वरनाथ रेणु की कहानी कला 165
डॉ. शबाना हबीब

15. रेणु की कहानियों में जीवन के विविध पक्ष 173
गोविंद कुमार यादव

16. रेणु की कहानियों में आधी आबादी का भाव-जगत 181
उद्धव शर्मा

17. आदिम रात्रि की महकती कहानियाँ 190
डॉ. अमित कुमार

19. 'एक श्रावणी दोपहर की धूप' में समकालीनता एवं शाश्वतता 201
डॉ. पी.सी. कोकिला

19. बारंबार परखिए, ना वा एक ही बार : 'अगिनखोर' 209
डॉ. विमलेश शर्मा

20. परंपरा, आधुनिकता, आंचलिकता और यथार्थ का सुंदर अंकन : 'तीसरी कसम' 223
डॉ. आशीष सिसोदिया

21. समाज की नब्ज़ को टटोलने का प्रयास : 'अच्छे आदमी' 228
डॉ. महात्मा पांडे

22. नेपाली क्रांति-कथा : भारत-नेपाल संबंधों की पड़ताल 233
डॉ. आकाश वर्मा

23. रेणु की जीवन-स्मृतियों का फलक : 'वन-तुलसी की गंध' 242
डॉ. प्रीति भट्ट

24. रेणु के साहित्य का सिनेमाई रूपांतरण : सिनेमा और साहित्य का अद्भुत सामंजस्य 253
डॉ. प्रणु शुक्ला

फणीश्वरनाथ रेणु : व्यक्ति और सृजन

डॉ. नवीन नंदवाना*

हिंदी साहित्य में आंचलिकता को एक अमर स्वर प्रदान करने वाले रचनाकारों में फणीश्वरनाथ रेणु का नाम अग्रणी है। प्रेमचंद के बाद गाँव, किसानी जीवन, अंचल तथा ग्रामीण यथार्थ को यदि किसी ने प्रमुखता से अपनी रचनाओं में वर्णित किया तो उसमें फणीश्वरनाथ रेणु का नाम प्रमुखता से लिया जा सकता है। आंचलिकता को स्पष्ट करते हुए धीरेंद्र वर्मा द्वारा संपादित कोश में लिखा गया है कि- "आंचलिक रचनाओं में कोई विशिष्ट अंचल व क्षेत्र या उसका कोई एक भाग व गाँव ही प्रतिपाद्य या विवेच्य होता है। इस प्रकार उपन्यास का कथा चित्र अत्यधिक सीमित हो जाता है। आंचलिकता की सिद्धि के लिए स्थानीय दृश्य, प्रकृति, जलवायु, त्योहार, लोकगीत, बातचीत का विशिष्ट ढंग, मुहावरे-लोकोक्तियाँ, भाषा व उच्चारण की विकृतियाँ, लोगों की स्वभाव व व्यवहार विशेषताएँ, उनका अपना रोमांस, नैतिक मान्यताएँ आदि का समावेश बड़ी सतर्कता और सावधानी से किया जाना अपेक्षित है। आंचलिक रचना भले ही सीमित क्षेत्र से संबंधित हो, पर प्रभाव की दृष्टि से वह सार्वजनीन हो सकती है, बशर्ते उसका सृष्टा वैसी ही प्राणवत्ता व अतल-स्पर्शी सूक्ष्म-दृष्टि रखता हो तथा उसके विचारों में गरिमा व कला में सौष्ठव हो।"[1] हिंदी के इस अमर कथा-शिल्पी फणीश्वरनाथ रेणु में वैसी ही प्राणवत्ता एवं अतल-स्पर्शी सूक्ष्म-दृष्टि थी, इसी कारण उनका साहित्य आज साहित्य परंपरा में अपना विशिष्ट स्थान रखता है।

* सह आचार्य, हिंदी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान) 313001

हिंदी जगत में आंचलिक रचनाकार के रूप में विख्यात फणीश्वरनाथ रेणु का जन्म बिहार के पूर्णिया जिले के औराही हिंगना ग्राम में 4 मार्च, 1921 को हुआ। रेणु के पिता का नाम शिलानाथ मंडल था जो कि एक संपन्न किसान थे। इनकी माता का नाम पानो देवी था। रेणु को यह रेणु उपनाम श्री कृष्णप्रसाद कोइराला द्वारा प्रदत्त है, ऐसा उल्लेख उनकी रचना 'नेपाल मेरी सानोआमाँ' में मिलता है। रेणु को राजनीति व साहित्य में अभिरुचि अपने पिता एवं परिवार से ही मिली। उनके पिता की रुचि देशभक्त कार्यकर्ताओं एवं साहित्य के संरक्षण में रही है। उनके विषय में हिंदी के ख्यातनाम रचनाकार नागार्जुन का मत है कि- ''उनके पिता स्वयं तो कभी जेल नहीं गए, किंतु फरार नेताओं और कार्यकर्ताओं को अपने यहाँ छुपा कर रखने का शौक था। वर्जित और निषिद्ध साहित्य (चाँद का फाँसी अंक, भारत में अंग्रेजी राज्य आदि) बाबू शिलानाथ जी के घर गुप्त रूप से रखा दिया जाता था।''[2] दादी-नानी की कहानियाँ, हलवाई के बिरहा गीतों, बड़े-बूढ़ों के सारंगा सदावृत्त, सोहर, कजरी, फाग और बारहमासा आदि गीतों व कहानियों ने भी रेणु की साहित्यिक पृष्ठभूमि तैयार करने में अपनी महती भूमिका अदा की। रेणु का बचपन नेपाल में विराट नगर स्थित कोइराला निवास में बीता, वहाँ रेणु ने अनुशासन व पारिवारिक जीवन की शिक्षा हासिल की।

रेणु की आरंभिक शिक्षा कुसुमलाल मंडल नामक शिक्षक के कुशल निर्देशन में घर में ही संपन्न हुई। इसके बाद की शिक्षा अररिया, सिमबनी और फारबिसगंज के स्कूलों में हुई। बाद में उनका अध्ययन आदर्श विद्यालय, विराटनगर में भी जारी रहा। स्कूली जीवन में ही रेणु ने कविता लेखन आरंभ कर दिया था। विराटनगर के अध्ययन के बाद रेणु ने बनारस का रुख किया। यहाँ के एक स्कूल से आपने मेट्रिक की परीक्षा उत्तीर्ण की। बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से रेणु ने इंटरमीडिएट की तथा स्नातक का अध्ययन आरंभ किया। शिक्षा के साथ-साथ अब रेणु का जुड़ाव राजनीतिक जीवन से होने लगा। ''समाजवादी वामपंथी आंदोलन का प्रभाव रेणु पर यहीं से प्रारंभ हुआ। बनारस से बिहार लौटकर उन्होंने भागलपुर टी.एन.जे. कॉलेज में दाखिला लिया। इसी क्रम में उनका संबंध नेपाल के कोइराला परिवार के साथ घनिष्ठ हुआ। नेपाल के मुक्ति आंदोलन में उनकी भूमिका को लेकर संदेह नहीं किया जा सकता।''[3]

रेणु के राजनीतिक जीवन की शुरुआत सन 1940 के लगभग हुई। इनके राजनीतिक जीवन पर ब्रह्म समाज, रामकृष्ण मिशन और थियोसोफिकल सोसायटी का

भी प्रभाव पड़ा। रेणु 1941 में गाँधीजी द्वारा चलाए जा रहे आंदोलन से जुड़े और 1942 में आपको 30 माह की जेल की सजा काटनी पड़ी। देश की आजादी के बाद की सामाजिक-राजनीतिक स्थितियों ने मोहभंग की स्थिति बना दी। रेणु 1950 में नेपाली क्रांति का हिस्सा बने। यहाँ राणाशाही के विरोध में कोइराला बंधुओं की सशक्त क्रांति में भाग लिया। बाद में बिहार में जयप्रकाश नारायण द्वारा चलाए गए आंदोलन में भी हिस्सा लिया। नेपाल की इस क्रांति कथा को रेणु ने अपनी रचना 'नेपाली क्रांति कथा' में वर्णित किया। वहीं उनके राजनीतिक जीवन से प्राप्त अनुभवों को उनके कथा साहित्य में भी देखा जा सकता है। इस विषय में कमलेश्वर का मत है कि- ''नेपाल की मुक्ति के लिए रेणु ने अपने यौवन का बलिदान दिया और सक्रिय राजनीति में अपने को भूलकर जुटा रहा। इसी से वह टूट गया ...। उसने अपने शरीर को क्षत-विक्षत कर लिया और सन 1952-53 में वह राजनीति के क्षेत्र में एक थके हुए यौद्धा के रूप में लौटा और मरने का इंतजार करने लगा।''[4]

रेणु का व्यक्तित्व अपनी विशिष्टता लिए था। स्वभाव से सीधे, सरल, सहज व्यक्तित्व के धनी रेणु अन्याय के विरुद्ध उतने ही कठोर थे। नख से शिख तक बिहार के सामंतशाही स्वरूप में दिखने वाले रेणु सदैव न्याय के पक्षधर रहे। उनके व्यक्तित्व के बाह्य पक्ष पर प्रकाश डालते हुए डॉ. हरिशंकर दुबे लिखते हैं कि- ''झबरे केश, गुच्छों से ढँका हुआ चौड़ा सिर, उन्नत ललाट, ललाट के नीचे नासिका पर सुनहरे फ्रेम का चश्मा जिसमें से झाँकती दूरदर्शनी दृष्टि। भोला मासूम चेहरा। उभरे फैले होठों पर शिशुवत मुस्कान। ओठों से झाँकती सीपी में मोती की तरह निबद्ध चमकती दंतावली। श्यामल साँवरे की तरह श्यामली सलोनी सूरत। सामान्य कदकाठी के बाहुबली व्यक्ति। ... चेहरे पर उत्साह और पीड़ित वर्ग की व्यथा के प्रति सचेत, ग्राम्य व शहरी संस्कृति का समन्वय करने वाली नारी सुलभ सहजता का नाम ही फणीश्वरनाथ रेणु था।''[5]

रेणु के पारिवारिक जीवन पर दृष्टि डालें तो पाते हैं कि उनका बचपन सुख-सुविधाओं से भरा था। दादी के प्यार, माता के आदर्श और पिता के कठोर अनुशासन भरे व्यवहार ने रेणु के व्यक्तित्व निर्माण में अपनी अहम भूमिका निभाई। रेणु ने अपने जीवन में तीन विवाह किए। रेणु का प्रथम विवाह 18 वर्ष की आयु में काशीनाथ मंडल की कन्या सुलेख देवी के साथ हुआ। सुलेख देवी के अत्यधिक बीमार रहने के कारण घर वालों के दबाव व सुझाव पर रेणु दूसरे विवाह के लिए तैयार हुए। आपका दूसरा विवाह 1949 में पद्मा देवी के साथ हुआ। यह पद्मा देवी

247

महमदिया ग्राम के खूबलाल विश्वास की विधवा बेटी थी। रेणु का तीसरा विवाह 1952 में लतिका के साथ हुआ। यह लतिका पटना के अस्पताल में परिचारिका (नर्स) थी जो कि राजनीतिक बंदियों में से बीमारों की देखभाल के लिए नियुक्त थी। सन 1944 में रेणु राजनीतिक बंदी के रूप में बीमार हो, यक्ष्मा रोगी के रूप में अस्पताल में भर्ती हुए। लतिका जी की सेवा व स्नेह धीरे-धीरे विवाह में परिणत हो गया।

रेणु को गाँव और ग्रामीण संस्कृति से गहरा लगाव था। उनको ग्रामीण जनों के साथ-साथ वहाँ के खेत-खलिहानों, पशु-पक्षियों, नाच-गानों, मेले-उत्सवों सभी से बहुत लगाव था। लोकगीतों व लोक कथाओं से भी रेणु को गहरा जुड़ाव था। रेणु की प्रसिद्ध कहानियों 'तीसरी कसम' और 'पंचलाइट' पर फिल्में बन चुकी है। साहित्य जगत में रेणु की विशेष प्रसिद्धि इन कहानियों और 'मेला आँचल' नामक उपन्यास के कारण हुई। सन 1968 में भारत सरकार ने रेणु को पद्म श्री से सम्मानित किया। हिंदी जगत का यह प्रमुख हस्ताक्षर 11 अप्रैल, 1977 को इस दुनिया को अलविदा कह गया।

हिंदी साहित्य को 'मैला आँचल' जैसी अमर कृति भेंट करने वाले फणीश्वरनाथ रेणु ने कथा साहित्य और कथेतर लेखन को विशेष रूप से अपनाया। उपन्यास और कहानी लेखन की दिशा में तो रेणु का अपना अमर नाम है ही साथ ही आपने संस्मरण और रिपोर्ताज लेखन के क्षेत्र में भी विशेष ख्याति अर्जित की। रेणु के संपूर्ण रचना संसार पर दृष्टि डालें तो पाते हैं कि आपने 'मेला आँचल' (1954), 'परती परिकथा' (1957), 'जुलूस' (1965), 'दीर्घतपा' (1964, यह उपन्यास बाद में सन 1972 में 'कलंक मुक्ति' नाम से प्रकाशित हुआ।), 'कितने चौराहे' (1966) और 'पल्टू बाबू रोड' (1979) शीर्षक से उपन्यासों की रचना की। इनमें से 'मैला आँचल' ने हिंदी जगत में खूब ख्याति अर्जित की। इस उपन्यास ने हिंदी की आंचलिक उपन्यास परंपरा का दिशाबोध किया। वहीं रेणु द्वारा रचित कहानी संग्रहों में 'एक आदिम रात्रि की महक', 'ठुमरी', 'अगिनखोर' 'अच्छे आदमी' और 'एक श्रावणी दोपहर की धूप' हैं। आपने 'ऋण जल-धन जल', 'नेपाली क्रांति कथा', 'वन तुलसी की गंध', 'श्रुत-अश्रुत पूर्व', 'आत्म परिचय' और 'समय की शिला पर' शीर्षकों से आपने कथेतर रचनाएँ लिखीं। आपने कुछ कविताएँ और गद्य गीतों की भी रचना की।

'मैला आँचल' (1954) बिहार के पूर्णिया जिले के मेरीगंज नामक स्थान को आधार बनाकर रचा गया। इसका प्रथम प्रकाशन ममता प्रकाशन, पटना से हुआ। एक

पिछड़े गाँव को आधार बनाकर रचनाकार ने विभिन्न पात्रों व घटनाओं के सहारे ग्रामीण जीवन के आदर्श और यथार्थ, संवेदनाएँ और संघर्ष, राजनीति और धर्म, सुंदरता और कुरूपता सभी को अपनी कलम का विषय बनाकर मेरीगंज के बहाने भारतीय ग्रामीण जीवन की झाँकी प्रस्तुत की है। आंचलिकता के लिए रेणु ने बीच-बीच में लोकभाषा के शब्दों, लोकगीतों, तीज-त्योहारों, नृत्य-कीर्तन आदि का सहारा लिया है। उपन्यास के आरंभ में ही रेणु ने लिखा है- "यह है 'मैला आँचल', एक आंचलिक उपन्यास। कथानक है पूर्णिया। पूर्णिया बिहार राज्य का एक जिला है (इसके एक ओर है नेपाल, दूसरी ओर पाकिस्तान और पश्चिमी बंगाल। .....मैंने इसके एक हिस्से के एक ही गाँव को- पिछड़े गाँव का प्रतीक मानकर- इस उपन्यास-कथा का क्षेत्र बनाया है।'[6] गाँव में मलेरिया सेंटर बनना, तहसीलदार विश्वनाथ, राजपूत टोले के राम किरपाल सिंह, सुराजी बालदेव, यादव टोले के राम खेलावन यादव, बावनदास, कालीचरण, सनिच्चरा, मठ के महंत सेवादास, चेला रामदास, दासी लक्ष्मी और डॉ. प्रशांत के माध्यम से कथानक विस्तार पाता है। यहाँ रेणु ने मेरीगंज के बहाने भारतीय गाँवों का चित्र हमारे समक्ष अंकित किया है। डॉ. प्रशांत इन भारतीय गाँवों के कल्याण की कामना रखता है। इसी कारण वह कहता है कि- "ममता! मैं फिर काम शुरू करूँगा- यहीं, इसी गाँव में। मैं प्यार की खेती करना चाहता हूँ। आँसू से भीगी हुई धरती पर प्यार के पौधे लहलहाएँगे। मैं साधना करूँगा, ग्रामवासिनी भारतमाता के मैले आँचल तले! कम-से-कम एक ही गाँव के कुछ प्राणियों के मुरझाए ओठों पर मुस्कराहट लौटा सकूँ, उनके हृदय में आशा और विश्वास प्रतिष्ठित कर सकूँ .....।'[7]

देश की मिट्टी, यहाँ के गाँवों और मानवता से मोहब्बत करने वाले चरित्र के रूप में हम यहाँ डॉ. प्रशांत को देखते हैं। उपन्यास में पूँजीवाद और जमींदारी का विरोध भी दिखाई पड़ता है। कालीचरण इन पूँजीपतियों और जमींदारों के शोषण की तुलना मच्छरों और खटमलों द्वारा खून के चूसने से करता है। इस प्रकार इस उपन्यास में हम राजनीति-कूटनीति, अज्ञानता-अशिक्षा, रूढ़ियाँ-छुआछूत, जनजागरण-शोषण सभी कुछ पाते हैं। लोकगीतों और लोक संस्कृति की उपस्थिति भी अंचल से जोड़ती है।

'मैला आँचल' की पात्र योजना के विषय में नेमिचंद्र जैन लिखते हैं कि- "मैला आँचल के पात्रों को इसी से हम कई रूपों में देखते हैं और अंत में गहरी मानवीय सहानुभूति और आस्था की छाप वे हमारे मन पर छोड़ जाते हैं। बालदेव और कालीचरण, लक्ष्मी और महंत सेवादास, तहसीलदार विश्वनाथ प्रसाद और बावनदास

सभी जीते जागते व्यक्ति हैं। जिन्हें हम आदर्श कहें अथवा न कहें, पर इन्हें हमारी सहानुभूति अवश्य मिलती है। उनकी दुर्बलताएँ मानवता के भविष्य में हमारी आस्था को कम नहीं करतीं। दूसरे भी जितने पात्र इस उपन्यास में आते हैं, उनमें सदा अपना एक जीवित व्यक्तित्व मौजूद रहता है। उपन्यास में ऐसे स्थल बहुत ही कम हैं, जहाँ अति नाटकीयता अथवा अतिभावुकता लेखक के विवेक पर हावी हो गई है।'[8] इस उपन्यास के विषय में नलिन विलोचन शर्मा का मत है कि- ''मैला आँचल फणीश्वरनाथ रेणु का प्रथम उपन्यास है। यह ऐसा सौभाग्यशाली उपन्यास है, जो लेखक की प्रथम कृति होने पर भी उसे ऐसी प्रतिष्ठा प्राप्त करा दे कि वह चाहे तो कुछ और न भी लिखे। मैला आँचल गत वर्ष का ही श्रेष्ठ उपन्यास नहीं है, वह हिंदी के दस श्रेष्ठ उपन्यासों में सहज ही परिगणनीय है। मैंने इसे 'गोदान' के बाद हिंदी का वैसा दूसरा महान् उपन्यास माना है। .. 'मैला आँचल' की भाषा से हिंदी समृद्ध हुई है। रेणु ने कुशलता से ऐसी शैली का प्रयोग किया है, जिसमें आंचलिक भाषा-तत्त्व परिनिष्ठित भाषा में घुलमिल जाते हैं। हिंदी के उपन्यास-साहित्य में, यदि गत्यवरोध था, तो इस 'कृति' से वह हट गया है।'[9]

रेणु का दूसरा उपन्यास 'परती परिकथा' (1957) है। इस उपन्यास का केंद्रीय तत्त्व परती जमीन को हरीभरी देखना है। उपन्यास का पात्र जितेंद्रनाथ परानपुर गाँव की सैंकड़ों एकड़ परती जमीन को हरीभरी देखना चाहता है। यही इस उपन्यास का केंद्रीय भाव है। इस उपन्यास के माध्यम से भी रचनाकार ने भारतीय ग्रामीण जनता के हो रहे शोषण, राजनीति, दलबंदी, भ्रष्टाचार, अत्याचार, घूसखोरी जैसे विषयों को उठाया है। युवा पीढ़ी की बदलती सोच और शहरीकरण के प्रति उनमें बढ़ रहे आकर्षण को भी यहाँ दर्शाया गया है। गुरुवंशी बाबू, भोला बाबू जैसे पात्र यहाँ जमींदारी प्रथा के पोषक के रूप में दिखाई पड़ते हैं। ''मैला आँचल का प्रकाशन अगस्त, 1954 में हुआ और इसके तीन वर्ष बाद सितंबर, 1957 में परती : परिकथा का। इन दोनों उपन्यासों ने न सिर्फ़ रेणु को हिंदी साहित्य में एक बड़े लेखक के रूप में प्रतिष्ठित किया, बल्कि हिंदी की उपन्यास-विधा में एक युगांतर भी उपस्थित किया। इन दोनों गौरवशाली उपन्यासों ने हिंदी भाषा की अभूतपूर्व व्यंजना-क्षमता और संगीतात्मकता से पहले-पहल परिचित कराया। यह कहना बिल्कुल सही है कि ''रेणु ने भाषा को पार्श्व संगीत दिया।''[10]

इस उपन्यास के बाद रेणु ने दीर्घतपा (1963) उपन्यास की रचना की। इस उपन्यास को बाद में 'कलंक मुक्ति' नाम दे दिया। यहाँ रचनाकार ने बाँकीपुर के

विमेन्स वेलफेयर बोर्ड द्वारा संचालित विमेन्स होस्टल एवं मेटरनिटी सेंटर के बहाने हो रहे भ्रष्टाचार और अनैतिक आचरण को उद्घाटित किया है। बेला गुप्त, रमला बनर्जी, ज्योत्स्ना आनंद मोहंती और नर बहादुर महापात्र के माध्यम से रचनाकार ने यथार्थ का उद्घाटन किया है। अधिकारियों को खुश करने के लिए वर्किंग विमेन्स होस्टल की लड़कियों को नाच-गाने के कार्यक्रमों में सम्मिलित करना इन संस्थाओं की कार्यप्रणाली की पोल खोलता है। यहाँ नारी शोषण, अधिकारियों की भ्रष्ट कार्यप्रणाली, उनकी कामुकता आदि को उपन्यास का विषय बनाया है। अनैतिक आचरण का सहारा लेकर नौकरी बचाने वाली ज्योत्स्ना आनंद सदैव बेला गुप्त जैसी सिद्धांतवादी नौकरीपेशा स्त्री के विरुद्ध छल का सहारा लेती है।

रेणु द्वारा रचित चौथा उपन्यास 'जुलूस' (1965) है। यह सामाजिक यथार्थ को अभिव्यक्ति देने वाला उपन्यास है। यहाँ रेणु ने क्षेत्रीयता और सांप्रदायिकता जैसी समस्याओं को उठाया है। देश विभाजन के समय उत्पन्न शरणार्थियों की समस्या को भी रचनाकार ने इस उपन्यास के माध्यम से प्रमुखता से उठाया है। यहाँ शरणार्थियों व देशवासियों की परस्पर एक-दूसरे के प्रति मानसिकता भी द्रष्टव्य होती है। गोडियार गाँव के निकट बसे शरणार्थी न तो भारत की मिट्टी से उतना प्रेम करते हैं और न ही भारतीय गाँव के लोग उन्हें अपने वतन का मानते हैं।

'कितने चौराहे' शीर्षक उपन्यास 1966 में प्रकाशित हुआ। यहाँ मनमोहन नामक पात्र के माध्यम से भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़े युवाओं की कथा का वर्णन है। मनमोहन को प्रियोदा (प्रियव्रत राय) से राष्ट्रसेवा की प्रेरणा मिलती है। वह जीवन में कई चौराहों से गुजरता हुआ देशसेवा के भाव को अपनाता है। वह 1942 के गाँधीजी के नमक कानून आंदोलन का हिस्सा बनता है। स्वयं रेणु ने भी इस स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लिया था अत: इस उपन्यास में उनके निजी अनुभव भी वर्णित हुए हैं। इस उपन्यास के माध्यम से रेणु ने स्वतंत्रता पूर्व के भारत और स्वतंत्रता आंदोलन तथा उसका युवाओं पर प्रभाव वर्णित किया है। रेणु ने चौराहे को प्रतीक रूप में मनुष्य जीवन के विविध पड़ावों से जोड़ा है।

रेणु द्वारा रचित अंतिम उपन्यास 'पल्टू बाबू रोड' (1979) है। यहाँ भी 'मैला आँचल' की तरह पूर्णियाँ जिले को आधार बनाया है। यहाँ रेणु ने पूर्णिया के बैरगाछी स्थान को अपनी कथा का आधार बनाया है। यह उपन्यास बैरगाछी कस्बे के राय परिवार की कथा को अभिव्यक्ति देता है। पच्चीस वर्षीय कामुक स्वभाव के व्यक्ति पलटू बाबू का चरित्र भी यहाँ उद्घाटित हुआ है। यहाँ बिजली नामक स्त्री पात्र द्वारा

249

पलटू बाबू का विरोध, पलटू बाबू द्वारा बिजली से बदला लेने के घटनाक्रम से उपन्यास की कथा आगे बढ़ती है। यहाँ रेणु ने प्रशासनिक अधिकारियों व राजनीति के यथार्थ को भी चित्रित किया है। अत्यधिक महत्त्वाकांक्षा की पूर्ति के लिए मनुष्य किस कदर अपने चरित्र व स्थान दोनों से गिर जाता है, वह सब यहाँ द्रष्टव्य है। पैसा व अधिकार पाने की लालसा की पूर्ति के लिए परिवार की स्त्रियों को देह-व्यापार से जोड़ने जैसे घृणित कृत्य भी यहाँ उजागर हुए हैं।

एक कहानीकार के रूप में रेणु विख्यात रहे हैं। उनके कहानी संग्रह 'ठुमरी' (1959), 'आदिम रात्रि की महक' (1967), 'अगिनखोर' (1973), 'अच्छे आदमी' (1986) शीर्षक से प्रकाशित हुए। ''1942 के आंदोलन में गिरफ्तार होने के बाद जब वे 1944 में जेल से मुक्त हुए, तब घर लौटने पर उन्होंने 'बटबाबा' नामक पहली परिपक्व कहानी लिखी। 'बटबाबा' साप्ताहिक 'विश्वामित्र' के 27 अगस्त, 1944 के अंक में प्रकाशित हुई। रेणु की दूसरी कहानी 'पहलवान की ढोलक' 11 दिसंबर, 1944 के साप्ताहिक 'विश्वामित्र' में छपी। 1972 में रेणु ने अपनी अंतिम कहानी 'भित्ति चित्र की मयूरी' लिखी। अपने 29 वर्षों के कहानी लेखन के दौरान रेणु की प्रकाशित कहानियों की सूची बहुत बड़ी नहीं है। उनकी अब तक उपलब्ध कहानियों की संख्या 63 है।''[11]

'ठुमरी' रेणु का प्रथम कहानी संग्रह है। यह 09 कहानियों का संकलन है। इस संग्रह में 'रसप्रिया', 'तीर्थोदक', 'ठेस', 'नित्यलीला', 'पंचलाइट', 'सिरपंचमी का सगुन', 'तीसरी कसम', 'लालपान की बेगम' और 'तीन बिंदिया' शीर्षक कहानियाँ संकलित हैं। यह कहानी संग्रह आंचलिक परंपराओं और आस्थाओं को अभिव्यक्ति देने वाला संग्रह है। इस संग्रह की कहानी 'तीसरी कसम' बहुत चर्चित रही। इस कहानी पर फिल्म भी बन चुकी है, जो बहुत लोकप्रिय हुई। यह कहानी गाड़ीवान हिरामन और नर्तकी हीराबाई के पवित्र प्रेम को अभिव्यक्ति देने वाली कहानी है। वहीं 'लालपान की बेगम' कहानी नारी मनोविज्ञान को वाणी प्रदान करती है। 'पंचलाइट' भी रेणु की एक चर्चित कहानी है। इस कहानी पर भी फिल्म का निर्माण हो चुका है। ग्रामीण लोक जीवन का यथार्थ इस कहानी में देखा जा सकता है। बिहार के ग्रामीण जीवन का यथार्थ इस कहानी में देखा जा सकता है। बिहार के ग्रामीण जीवन के आपसी संघर्ष को अभिव्यक्ति देने वाली कहानी है। एक कलाकार के जीवन में उतार-चढ़ाव, प्रेम-संवेदना और संघर्ष को 'रसप्रिया' कहानी में अनुभूत किया जा सकता है।

'आदिम रात्रि की महक' संग्रह फणीश्वरनाथ रेणु की 14 कहानियों का संकलन है। इस संग्रह में 'विघटन के क्षण', 'तँबे एकला चलो रे', 'एक आदिम रात्रि की महक', 'जलवा', 'पुरानी कहानी : नया पाठ', 'अतिथि सत्कार', 'उच्चाटन', 'काका चरित' 'आजाद परिंदे', 'जड़ाऊ मुखड़ा', 'ना जाने केहि वेश में', 'प्रजा सत्ता', 'आत्मसाक्षी' और 'नैना जोगिन' कहानियाँ संकलित हैं। 'अगिनखोर' नामक संग्रह में 'अगिनखोर', 'रेखाएँ : वृत्त चक्र', 'भित्तिचित्र की मयूरी', 'लफड़ा', 'शीर्षकहीन', 'एक कहानी का सुपात्र', 'जैव', 'मन का रंग', 'दस गज्जा के इस पार और उस पार', 'अक्ल और भैंस' तथा 'अग्निसंचारक' शीर्षक 11 कहानियाँ संगृहीत हैं। यह संग्रह मुख्यत: युवापीढ़ी की मनोदशा, माटी से प्रेम, सामाजिक बुराइयों, विलासिता, रूढ़िवादिता, अंधविश्वास और व्यंग्य आदि विषयों को आधार बनाकर लिखा गया है।

'एक श्रावणी दोपहर की धूप' रेणु की असंकलित कहानियों का संकलन है। यह संग्रह 1984 में प्रकाशित हुआ। इस संग्रह में 'न मिटने वाली भूख', 'वंडरफुल स्टूडियो', 'अपनी कथा', 'कस्बे की लाडली', 'हाथ का जस और वाक का सत्त', 'पुरानी याद', 'एक लोकगीत के विद्यापति', 'एक श्रावणी दोपहर की धूप', 'संकट', 'विकट संकट', 'अभिनय', 'तब शुभ नामे', 'एक रंगबाज गाँव की भूमिका' और 'संवदिया' शीर्षक से कुल 14 कहानियाँ संकलित हैं। ''एक श्रावणी दोपहरी की धूप' प्रख्यात कथाकार फणीश्वरनाथ 'रेणु' की असंकलित कहानियों का संग्रह है। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित ये प्राय: उनकी प्रारम्भिक रचनाएँ हैं, इसलिए इनका दोहरा महत्त्व है। एक ओर ये हमें उनकी रचनात्मक प्रतिभा के शैशव तक ले जाती हैं, तो दूसरी ओर समकालीन कथा-साहित्य में उस नयी कथा-प्रवृत्ति का उदयाभास कराती हैं जो बाद में उनकी अन्य महत्त्वपूर्ण कहानियों और उपन्यासों में परिपक्व हुई और जिसने एक समूचे कथायुग को प्रभावित किया। रेणु की कहानियाँ मानव-जीवन के प्रति गहन रागात्मकता का परिणाम हैं। वे उनके यथार्थ को समग्रता में पकड़ने और उसकी तरल भावनात्मक अभिव्यक्ति में विश्वास रखते हैं। हम उनके पात्रों के साथ-साथ उदास और उल्लसित हो उठते हैं। उनमें जो लोक-मानस का विस्तार है, जो रस और संगीत है, वह हमारे मानवीय संवेगों को गहराता है। इन कहानियों के माध्यम से वस्तुत: रेणु एक बार फिर हमें उस रचना-भूमि तक ले जाते हैं, जिसमें पहली बार नहायी धरती के सोंधेपन, बसन्त की मादकता और पसीने की अम्लीय गंध का अहसास होने लगता है।''[12]

'अच्छे आदमी' रेणु द्वारा रचित असंकलित और अप्रकाशित कहानियों का संग्रह है। इसमें 'टेबल टेनिस', 'अच्छे आदमी', 'पार्टी का भूत', 'टौन्टी नैन का खेल', 'रोमांस शून्य प्रेमकथा की एक भूमिका', 'बोमारी की दुनिया में', 'एक रात', 'स्टिल लाइफ', 'रेखाएँ वृत्त चक्र', 'पार्टी का भूत', 'धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे', 'प्रतिनिधि चिट्ठियाँ', 'नये सवेरे की आशा' और 'जीत का स्वाद' आदि कहानियाँ संगृहीत हैं।

''रेणु ने अपने आत्म-कथ्य में चित्रगुप्त महाराज द्वारा निर्मित भाग्य-लेख के अंशों में अपना परिचय देते हुए कहा है कि यह आदमी 'एक ही साथ सुर और असुर, सुंदर और असुंदर, पापी और विवेकी, दुरात्मा और संत, आदमी और साँप, जड़ और चेतन- सब कुछ होगा।' क्या यही परिचय अपने विविध और विस्तृत रूप में उनकी समस्त रचनाओं में नहीं लहरा रहा है ? जड़ीभूत सौंदर्याभिरुचि को गतिशील और व्यापक फलक प्रदान करनेवाली रेणु की कहानियों ने हिंदी कथा-साहित्य को एक नयी दिशा दी है- सामाजिक परिवर्तन ही एकमात्र विकल्प है। यह दिशा ही रेणु की रचनाओं की मूल सोच है। बड़े चुपके से कभी उनकी कहानियाँ किसानों और खेत मजदूरों के कान में कह देती हैं कि जमींदारी प्रथा अब नहीं रह सकती और जमीन जोतनेवाले की ही होनी चाहिए। कभी मजदूरों को यह संदेश देने लगती है कि तुम्हारी मुक्ति में ही असली सुराज का अर्थ छिपा है- भूल-भुलैया में पड़ने की जरूरत नहीं। क्या कला, क्या भाषा, क्या अन्तर्वस्तु और विचारधारा, कोई भी कसौटी क्यों न हो, रेणु की कहानियाँ एकदम खरी उतरती हैं, लोगों का रुझान बदल देती हैं और यही रचनात्मक गतिविधि रेणु के साहित्य में उनके अप्रतिम योगदान को अक्षुण्ण बनाती है। अच्छे आदमी में संगृहीत विहित रंगों की ये कहानियाँ रेणु की इसी विशिष्ट रचना-यात्रा का अगला पड़ाव हैं।''[13]

'मेरी प्रिय कहानियाँ' शीर्षक से भी रेणु की कहानियों का एक संकलन प्रकाशित हुआ। नौ कहानियों वाले इस संकलन में केवल 'संवदिया' शीर्षक कहानी ही नई कहानी है। शेष कहानियाँ पूर्व के संकलनों से ही ली गई है। ''रेणु प्रेमचंद के बाद ग्रामीण जीवन के सबसे प्रमुख कथाकार हैं। इनकी प्रमुखता का सबसे बड़ा कारण है ग्रामीण जीवन को अपने कथा क्षेत्र का आधार बनाते हुए भी प्रेमचंद के कथा-शिल्प से अपने को विलगाना। जबकि उनकी पीढ़ी के अन्य कथाकार, जो ग्राम केंद्रित कहानियाँ लिख रहे थे, प्रेमचंद के नक्शे-कदम पर चले। पर रेणु की कहानियाँ आज भी अलग ही अंदाज दिखाती हैं। इसका कारण क्या है? प्रेमचंद और रेणु दोनों के पात्र निम्नवर्गीय हरिजन, किसान, लोहार, बढ़ई, चर्मकार, कर्मकार आदि हैं। दोनों

कथाकारों ने साधारण पात्रों की जीवन-कथा की रचना की है, पर दोनों के कथा-विन्यास, रचना-दृष्टि और 'ट्रीटमेंट' में बहुत फर्क है। प्रेमचंद की अधिकांश कहानियों में इन उपेक्षित और उत्पीड़ित पात्रों का आर्थिक शोषण या उनकी सामंती और महाजनी व्यवस्था के फंदे में पड़ी हुई दारुण स्थिति का चित्रण है, जबकि रेणु ने इन सताये हुए शोषित पात्रों की सांस्कृतिक संपन्नता, मन की कोमलता और रागात्मकता तथा कलाकारोचित प्रतिभा का मार्मिक चित्र प्रस्तुत किया है। प्रेमचंद रूसी कथाकार मैक्सिम गोर्की के करीब पड़ते हैं, जबकि रेणु मिखाइल शोलोखोव के। इस तरह रेणु एक अलग ही परंपरा की शुरुआत करते हैं। ये दोनों महान कथा-शिल्पी मिलकर उस 'साधारण' मनुष्य का पूरा चित्र दे पाते हैं। अन्यथा, एक प्रकार से दोनों अपने आप में एकांगी हैं। रेणु प्रेमचंद के संपूरक कथाकार हैं। इसका मतलब यह नहीं कि रेणु का जनता की समस्याओं के प्रति ध्यान नहीं।''[14]

कथा साहित्य के अलावा रेणु ने कथेतर विधाओं में भी अपनी कलम चलाई है। 'ऋण जल-धन जल' (1978), 'नेपाली क्रांति कथा' (1978), 'वन तुलसी की गंध' (1984), 'श्रुत अश्रुत पूर्व' (1980) आदि उनकी कथेतर साहित्य की रचनाएँ हैं। रेणु का प्रथम रिपोर्ताज 'बिदापत-नाच' है जो कि 'विश्वामित्र' नामक साप्ताहिक पत्रिका में सन 1945 में प्रकाशित हुआ। '' रेणु का पहला रिपोर्ताज 1945 में प्रकाशित हुआ एवं अंतिम पटना-जलप्रलय पर 1975 में, यानी उनके लेखन के प्रारंभिक दौर से अंतिम दौर तक रिपोर्ताज-विधा से उनका गहरा जुड़ाव रहा। रेणु ने इस विधा का हिंदी में प्रारंभ करने के साथ ही उसे विकास के चरम पर भी पहुँचाया। रेणु के रिपोर्ताजों में 1945 से 1975 तक के बीच की कई भूली-बिसरी घटनाएँ, कथाएँ, प्रसंग और जीवन स्थितियाँ तो प्रस्तुत हुई ही हैं, इनमें रेणु का अपना असली व्यक्तित्व, उनके विभिन्न प्रकार के 'मूड्स', उनकी आस्था और विश्वास के दर्शन भी होते हैं। इनमें रेणु का कथाकार लोक-जीवन से लेकर मुंबई की फिल्मी दुनिया तक जाता है, नेपाल के मुक्ति-संग्राम में सशरीर भाग लेता है और पाकिस्तान युद्ध तथा बांग्लादेश मुक्ति संग्राम की बारीक से बारीक ध्वनियाँ सुनता है। बाढ़ और सूखा- ये दो त्रासदियाँ हर वर्ष देश में कहीं न कहीं घटित होती रहती हैं और रेणु के बाढ़ और अकाल के रिपोर्ताज़ आज भी मानो भूख और गरीबी से लड़ते मनुष्यों की संघर्ष गाथा प्रस्तुत करते दिखाई पड़ते हैं।''[15]

'ऋण जल-धन जल' नामक रचना में रेणु ने सूखे और बाढ़ की समस्या को आधार बनाया है। 'ऋण जल' नामक खंड में रचनाकार ने सूखे की समस्या को

वर्णित किया है, वहीं 'धन जल' नामक खंड में बाढ़ की समस्या की ओर ध्यान आकृष्ट किया है। 'नेपाली क्रांति कथा' के रिपोर्ताजों के लिए लेखक ने 1950-51 के नेपाली आंदोलन को आधार बनाया है। यहाँ हम सैनिकों, गोलियों व युद्धों के वर्णन देख सकते हैं। यह रचना राणाशाही के जनविरोधी शोषण, भारत-नेपाल संबंध और नेपाली क्रांति में भारतीयों व रेणु की भूमिका को उद्घाटित करने वाला ग्रंथ है। 'वन तुलसी की गंध' एक संस्मरणात्मक रचना है। इसके प्रथम भाग में यशपाल, अज्ञेय, अश्क, जैनेंद्र, उग्र, कामताप्रसाद सिंह 'काम' और त्रिलोचन पर रचित रेखाचित्र हैं। इस भाग का शीर्षक है- 'पाठकराम को शब्द चाहिए'। वहीं दूसरे भाग का शीर्षक है- 'बात उन दिनों की है'। इस भाग में बालकृष्ण 'सम', सुहैल अजीमाबादी, रवींद्रनाथ ठाकुर, हंग्री जेनरेशन के कवियों एवं सतीनाथ भादुड़ी पर लिखे रेखाचित्र हैं। ये नेपाली, उर्दू एवं बांग्ला के लेखक हैं। इसका तीसरा भाग 'मन के पर्दे पर' है। यहाँ रेणु ने ऐसे व्यक्तियों, दृश्यों, घटनाओं आदि को रेखाचित्रों में अंकित किया है जिनकी उनके लेखन पर गहरी छाप पड़ी।

'श्रुत अश्रुत पूर्व' एक विशिष्ट निबंध संग्रह है। इस संग्रह में 'राष्ट्र निर्माण में लेखक का योगदान' तथा 'जनजागरण में साहित्य की भूमिका' जैसे महत्त्वपूर्ण निबंध संगृहीत हैं। 'रेणु से भेंट' एक साक्षात्कार संग्रह है। विभिन्न विद्वानों द्वारा रेणु से लिए गए साक्षात्कारों की पुस्तक है। रेणु के व्यक्तित्व और रचना संसार को जानने की दिशा में यह पुस्तक अपनी महती भूमिका रखती है।

रेणु ने साहित्य की विविध विधाओं में अपनी कलम चलाई। उन्होंने उपन्यास, कहानी और रिपोर्ताज विधा में तो साधिकार लेखन किया ही है पर उनकी कलम केवल इन्हीं विधाओं तक नहीं रुकी। उन्होंने संस्मरण, स्केच, निबंध, कविता, नाटक, हास्य-व्यंग्य, पटकथा और पत्रों आदि की भी रचना की। उन्होंने अपनी लेखनी सर्वप्रथम कविता रचना के लिए चलाई और ताउम्र इस विधा से जुड़े रहे।

"रेणु की सर्जनात्मक प्रतिभा की चमक उनके पत्रों में भी है। वे अपने पत्रों में कभी संस्मरण लिखते हैं, कभी डायरी। कभी अपनी मन:स्थिति को रखते हैं, कभी अपनी जीवन परिस्थितियों को। कभी वे अपनी आस्था और विश्वास को व्यक्त करते हैं और कभी कोई हास्यास्पद प्रसंग तो कभी कारुणिक स्थिति। अपने कथा-साहित्य में जिस तरह वे कम शब्दों में बड़ी बात कह जाते हैं, वैसा ही पत्रों में भी। डॉ. नामवर सिंह को उन्होंने लिखा था- "हाँ, मैं अपना उपन्यास पूरा करने के लिए ही आया था। अब तक गाँव में ही हूँ। किंतु, देखता हूँ कि तीन-चार महीने में 'हरिभजन' कम

और 'कपास ओटन' ज्यादा हुआ।" इसी पत्र के अन्त में वे लिखते हैं- "स्वस्थ हूँ। प्रसन्न नहीं। खेती सूख रही है। कहीं एक बूँद पानी नहीं।"[16]

इस प्रकार कहा जा सकता है कि रेणु का रचनाकर्म हमें तत्कालीन भारतीय ग्रामीण जीवन के विविध पक्षों से परिचित कराता है। यहाँ भारतीय गाँवों और ग्रामीण समाज का नग्न यथार्थ है। अंचल की भाषा और वहाँ के मुहावरों के सहारे रेणु ने वहाँ की राजनीति, सामाजिक चेतना, उनके संघर्ष और शोषण को अभिव्यक्ति दी है। लोकभाषा के शब्दों की महक, लोकगीतों की धुन और लोक संस्कृति का संचरण उनकी रचनाओं में विशिष्टता भरता है।

संदर्भ सूची

1. धीरेंद्र वर्मा : *हिंदी साहित्य कोश*, भाग-एक, ज्ञान मंडल, वाराणसी, 2009, पृष्ठ 74
2. भारत यायावर : *रेणु का जीवन*, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2002, आवृत्ति 2010, पृष्ठ 37
3. सुरेंद्र चौधरी : *फणीश्वरनाथ रेणु*, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 1987, पृष्ठ 78
4. पूर्ण देव : *रेणु का आंचलिक कथा साहित्य*, आशा प्रकाशन, नई दिल्ली, 1973, पृष्ठ 04
5. हरिशंकर दुबे : *हिंदी आंचलिकता का अभ्युदय और रेणु के उपन्यास*, अमन प्रकाशन, कानपुर, 2012, पृष्ठ 25
6. फणीश्वरनाथ रेणु : *मैला आँचल, रेणु रचनावली, खंड-2*, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012, भूमिका, पृष्ठ 22
7. वही, पृष्ठ 307
8. नेमिचंद्र जैन : *अधूरे साक्षात्कार*, अक्षर प्रकाशन, दिल्ली, 1992, पृष्ठ 36
9. भारत यायावर : *रेणु रचनावली*, खंड-2, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012, संपादकीय, पृष्ठ 10
10. भारत यायावर : *रेणु रचनावली*, खंड-2, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012, संपादकीय, पृष्ठ 9
11. भारत यायावर : *रेणु रचनावली*, खंड-1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012, संपादकीय, पृष्ठ 15
12. https://books.google.co.in/books/about/Ek_Shravni_Dophari_Ki_Dhoop.html?id=nFy7U0IEZTQC&redir_esc=y
13. https://www.goodreads.com/book/show/17997421
14. भारत यायावर : *रेणु रचनावली*, खंड-1, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012, संपादकीय, पृष्ठ 17
15. भारत यायावर : *रेणु रचनावली*, खंड-4, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012, संपादकीय, पृष्ठ 11
16. भारत यायावर : *रेणु रचनावली*, खंड-5, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2012, संपादकीय, पृष्ठ 11

□□□

252